बहाई धर्म में विभाजन के कारण कौन लोग ?

प्रिय बहाई मित्र,

कुछ लोग यह प्रश्न पूछते हैं कि बहाइयों में विभाजन क्यों हुआ ? इसके कारण क्या हैं?

यह अच्छी प्रथा है कि हमारे बीच में ऐसे प्रश्न उठते हैं लेकिन यह खेद की बात है कि इन प्रश्नों पर गहन अध्ययन नहीं होता और न ही इन के उत्तर ढूँढे जाते हैं। जब कि अब्दुल बहा का कथन है कि **"जब तक किसी समस्या पर गहन बातचीत न हो तब तक किसी सही दिशा और निर्देश का पता नहीं चलता और जब आपस में गहन विचार-धारा टकराती है तो उससे दिव्य किरण निकलती है और यही वास्तविकता होती है।"** (मकातीब ४/१५३)

मित्र कहते हैं कि बहाउल्लाह के अनुसार धर्म-रक्षक को बहाउल्ला के वंश से होना चाहिये। यह तथ्य किसी भी तरह से सही नहीं है और बहाउल्लाह ने कदापि ऐसा कोई तथ्य नहीं दिया है।

अधिकतर मित्र वास्तिवकता को न जानने और न सुनने के कारण, जो कुछ प्रशासन (UHJ, NSA, LSA) के द्वारा उनसे कहा जाता है उसी को प्रर्याप्त मानते हैं और उसके पश्चात् कुछ जानने का प्रयास नहीं करते। और इस तरह की अनावश्यक और विरोधी बातों को बहाउल्लाह से संबंधित करते हैं। बहाउल्लाह और अब्दुल बहा के लेखनों में पूर्णता को महत्व दिया है और आत्मिक संबन्ध को शारीरिक संबन्ध पर महत्व देने पर जोर दिया है।
इस संबन्ध में अब्दुल बहा कहते हैं :

"परिवारिक रिश्ते दो तरह के होते हैं, एक मिट्टी और जल और दूसरा आत्मा और हृद्य से।"
(माएदा-ए-आसमानी/१६१)

ऐ अब्दुल बहा के प्यारो !

अपने पिता के पुत्र हो जाओ और उस वृक्ष के फल हो जाओ। ऐसे पुत्र हो जाओ जो आत्मा और हृदय से पैदा हुआ है न कि मिट्टी और जल से और पुत्र वही है जो मानव के आत्मिक शाखा से निकला है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि हे प्रभू तू मुझे इस पथ पर दृढ़ कदम रहने की शक्ति प्रदान कर।

मित्रों ने जो बात अबदुल बहा से संबंधित किया है वह उनकी बात है ही नहीं। इसलिए आपसे निवेदन है कि जब आप यह लिखें कि **"अब्दुल बहा कहते हैं"** तो आपको मूल कथन को प्रस्तुत करना चाहिये न यह कि जो आप के मस्तिष्क में संदिग्ध रूप में हो उसे को प्रस्तुत करें।

इसके अतिरिक्त मित्रों को यह ध्यान देना चाहिए कि सभाओं (Assemblies) को इस बात का अधिकार नहीं है कि वह अब्दुल बहा और शोगी अफंदी ने जो जिम्मेदारी और अधिकार इन सभाओं को दिया है उससे हटकर कोई फैसला करें। यह तो प्रशासनिक मामले हैं तो किस तरह उनके लेख और कथन के खिलाफ कोई फैसला कर सकते हैं ? उनको कदापि इस तरह के किसी फैसले का अधिकार नहीं है। क्योंकि पवित्र पटलिका और वसीयतों के अनुसार बहाई धर्म के अंत तक धर्म रक्षकता (Guardianship) रहेगी। यहाँ तक कि अगर विश्व के समस्त जन इसके विरोध में प्रर्दशन करें तो भी सच्चाई को लोगों के मत से बदला नहीं जा सकता। (Selection from the writings of Abdul Baha, p-140)

जहाँ तक बहाइयों में विभाजन की बात है तो यह काम उन लागों का है जो धर्म रक्षक के विरोध में खड़े हुए हैं और दुख इस बात का है कि अधिकतर बहाइयों ने अंधा अनुसरण किया है। बेहतर है कि वह अब्दुल बहा के निम्नलिखित कथन पर ध्यान दें।

''अगर बहाई धर्म के दुर्ग की दीवार संविदा की ताकत से सुरक्षित न रही तो एक दिन ऐसा आएगा जब बहाई धर्म हजार वर्गो में विभाजित हो जाएगा, जैसा कि पहले धर्मों में हुआ है। लेकिन इस पवित्र धर्म की निर्मल सुरक्षा के लिये बहाइयों में विभाजन न हो बहाउल्लाह ने अपने उच्च कलम से लोगों से वचन लिया और उस केन्द्र को चुना जो किताब का समझानेवाला और विवादों को दूर करनेवाला है। जो कुछ वह लिखे और कहे वही सत्य और बहाउल्लाह की सुरक्षा में त्रुटियों से सुरक्षित है।'' (मुन्तखबाती अज मकातीब-४/१२५)

इसी तरह वसीयत में कहा है :-

''दैवी धर्म की ठोस दीवार धर्म रक्षक के अनुसरण से बची रहेगी, विश्व न्याय मंदिर के समस्त सदस्यों, अगसान, अफनान और सभी धर्म भुजाओं पर अनिवार्य है कि वह धर्म रक्षक का अनुसरण और नम्रता पूर्वक व्यवहार करें और उनके आधीन रहें। अगर किसी ने इसका विरोध किया तो उसने सत्य का विरोध किया। और वह बहाई धर्म में विरोध का कारण बना। और वह ईश्वरीय शब्द में विरोध पैदा करने का कारण बनेगा।''
(अलवाह वसाया-ए-मुबारका हज़रत अब्दुल बहा/१२)

मेरे प्रिय बहाई मित्रों,

अब आपने ध्यान दिया कि बहाई धर्म में इतने वर्ग क्यों बनें ? और क्या इसका कारण आप को पता चला? क्या आपने जाना कि अब्दुल बहा ने किस को विरोधी बताया और किस को वर्गो को बनानेवाला ?

निःसंदेह अब्दुल बहा की वसीयत से साफ पता चलता है कि धर्म रक्षक के अनुसरण से दूरी और उनके विरोध के कारण बहाई धर्म में बहुत से वर्ग बने हैं। **जो धर्म रक्षक से विमुख हैं, या जो धर्म रक्षक की छत्र छाया में नहीं हैं, गुमराह वर्ग हैं।** सच्चे और असली बहाई वही हैं जिन का **धर्म रक्षक** है।

हम आशा करते हैं कि बहाई मित्र धर्म रक्षक की तरफ शीघ्र पलटेंगे और उनके आज्ञाकारी होंगे।

(पी. एन. बी. सी.)